अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में दलित पैंथर आन्दोलन का एतिहासिक विश्लेषण

डॉ सुरेन्द्र सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास
मथुरा प्रसाद महाविद्यालय कोच (जालौन) उत्तर प्रदेश
ईमेल ss.poniya@gmail.com

सामाजिक आन्दोलन सामूहिक व्यवहार का एक स्वरूप है। यह सामाजिक उद्विकास, प्रगति और विकास की भांति ही परिवर्तन का एक ढंग भी है। मानव अपने व्यवहार की अभिव्यक्ति दो प्रकार से कर सकता है, व्यक्तिगत तौर पर और सामुहिक तौर पर सामूहिक तौर पर किया गया व्यवहार या तो समाज व्यवस्था का पोषक होता है या उसका विरोधी। सामाजिक आन्दोलनों का संचालन समाज तथा संस्कृति में नवीन परिवर्तन लाने अथवा नवीन परिवर्तनों का विरोध करने के लिए होता है। सामाजिक आन्दोलनों का उद्देश्य सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्रों में आंशिक अथवा आमूल-चूल परिवर्तन लाना हो सकता है। सामाजिक आन्दोलनों के पीछे कोई विचारधारा अवश्य होती है। किसी आन्दोलन का प्रारम्भ पहले असंगठित रूप में होता है और धीरे-धीरे उनमें व्यवस्था व संगठन पैदा हो जाता है। विगत वर्षों में दलित जातियों ने अपनी सामाजिक-आर्थिक दशाओं को सुधारने तथा देश के अन्य समूहों के द्वारा उन पर किये जाने वाले अन्यायों और अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाने की दृष्टि से अनेक आन्दोलन किये हैं।

अमेरिका के नीग्रो ब्लैक पैंथर की भांति महाराष्ट्र के प्रगतिशील विचारधारा के दलित युवकों ने तथाकथित अम्बेडकरवादी नेताओं की आपाधापी, स्वार्थपरक नीतियों, दोहरे दोगले चरित्र से ऊबकर दलित पैथर संगठन बनाया जो एक सुगठित सामाजिक संगठन के समरूप वैचारिक आंदोलन बन गया ।(1) दलित पैंथर की पहली बैठक बम्बई में 9 जुलाई 1972 को हुई। इस बैठक में बहुत बड़ी संख्या में दलित नौजवान एवं समाजवादी पार्टी के युवक क्रान्ति दल (क्रान्तिकारी नौजवान आन्दोलन) के कुछ सदस्य सम्मिलित हुए। इस बैठक का प्रारम्भ दलित पैंथर संगठन के निर्माण को घोषित करने वाले प्रकाशित पर्चे (हेंडबिल) से हुआ। इसमें बताया गया था कि स्वतंत्रता के पश्चात भी दलितों पर अत्याचार बढ़ रहे हैं और सरकार एवं प्रमुख नेता कोई भी कार्यवाही नहीं कर रहे हैं। इस बैठक में दलित नौजवानों से अपील की कि वे दलित पेंथर के झडे तले आ जाए तथा अन्याय से लड़े। यह पर्चा संगठन के अध्यक्ष सोरते के द्वारा जारी किया गया।(2) ये लोग अपने को पैंथर कहते थे क्योंकि वे कहते थे कि अपने अधिकारों के लिए पैंथर की भांति लड़ा जाए तथा अब वे अत्याचारियों की शक्ति तथा ताकत

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

से नहीं दबेंगें। पैंथरों के आक्रामक नेता राजा ढाले के लेख काला स्वतन्त्रता दिन ने अत्यधिक जागरूकता पैदा की तथा पूरे महाराष्ट्र में दलित पैंथर को प्रचारित कर दिया।(3)

पैंथर संगठन तथा इसकी शाखाएं अर्थात छावनियां बड़ी ही लचीली होती थीं। छावनियों में बैठक किसी एक नेता द्वारा सम्बोधित की जाती थी। बैठकों में अक्सर दलित पैंथर आंदोलन के उद्देश्यों तथा उसकी आवश्यकता पर जोर दिया जाता तथा साथ ही उसका प्रचार भी किया जाता था।(4) इस आन्दोलन ने वर्तमान संसदीय संस्थाओं और कार्य प्रणालियों का निषेध कर दिया है।(5) दलित पैंथर आंदोलन एक विलक्षण आंदोलन था जिसने एक ठोस विचारधारा का अनुसरण किया। पैथरों ने स्पष्ट रूप से डॉ अम्बेडकर की विचारधारा को एक हथियार के रूप में प्रयोग किया। उन्होंने घोषणा की कि जो भी शोषणकारियों का समर्थन करते हैं. ये पेंथरों के दुश्मन है और जो अत्याचार के विरुद्ध लडने वाली ताकतें हैं, ये सभी पैंथरों के मित्र हैं। पैंथरों ने प्रण लिया कि दलितों के मुक्ति सघर्ष का उद्देश्य है पूर्ण क्रान्ति।(6)

दलित पैंथर के घोषणा-पत्र ने जहां जागरूक और प्रगतिशील आम युवा पीढ़ी में हलचल पैदा की, वहीं समाजवादी, साम्यवादी, प्रगतिशील लेखकों विचारकों को झकझोर दिया। दलित पैंथरों ने इसे सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज माना। उनके द्वारा दावा किया गया कि दलितों पर अत्याचार करने में मुस्लिम काल या ब्रिटिशकाल के मुकाबले आज स्वतंत्र भारत में अधिक है।(7) पैथरों का मानना था कि दलित शक्ति एक सच्चाई है. दलित पैंथर एक प्रतीक है, दलित मुक्ति अवश्यम्भावी है।

सामाजिक आर्थिक क्रांतियों का एक साथ होना अत्यंत आवश्यक है। सामाजिक क्रान्ति ही आर्थिक क्रान्ति के लिए भूमि (मंच) तैयार करेगी। परम्परागत जाति आधारित पेशों को समाप्त करना बेहद जरूरी है। इससे कामगारों में भाईचारा स्थापित ही सकता है। योजनाओं में जनसंख्या को ध्यान में रखकर दलितों के उनकी संख्या के अनुपात में हिस्सा मिलना चाहिए। बारहवीं कक्षा तक सभी के लिए मुक्त एवं अनिवार्य शिक्षा होनी चाहिए। समानता पर आधारित सभी को एक जैसी शिक्षा दी जाए। शैक्षिक संस्थानों का राष्ट्रीयकरण होना चाहिए। स्त्रियों को सामाजिक स्तर पर एवं धार्मिक रूढ़ियों के नाम पर द्वितीय वर्ग का दर्जा समाप्त होना चाहिए।

भारतीय समाज की जड़ता पर लगातार चोट की जाए तथा जन्म से जुडी असमानता को समाप्त करने के लिए नये विचारों का सृजन किया जाए। गांवों में ही सामाजिक-आर्थिक शोषण तथा जन्म से जुड़ी असमानता का अत्यन्त घिनौना रूप दिखाई देता है। दलितों के गावों से निकालकर नजदीकी शहरों में या नए गांवों में एक साथ भारी मात्रा में बसने के लिए लगातार प्रेरित किया जाए। दलितों में जो दूसरों से अपेक्षा रखने की प्रवृत्ति पाई जाती है। उस भावना को समाप्त किया जाए। मानव मूल्यों की स्थापना के लिए विज्ञान और मानवीयता ही आधार हो। शिक्षा का प्रसार इन आदर्शों की प्राप्ति के लिए अत्यन्त आवश्यक कहा जा सकता

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

है। धर्म और परम्परा के नाम पर स्त्रियों पर होने बाला अत्याचार और शोषण जैसे कि देवदासी और उसके जैसी दूसरी अमानवीय अन्य प्रथाएं समाप्त होनी चाहिए ।(8)

भारतीय दलित पैंथर अपने आपको सीधे राजनीति से दूर रखेगा। अनुसूचित जाति व जनजातियों के प्रतिनिधियों को उनकी पार्टी ही नहीं उन लोगों के प्रति वफादार रहने पर भी दबाव डाला जाएगा जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसे मित्रों को सहयोग दिया जाएगा जो दलित मुक्ति को सक्रिय सहयोग दे सकते हैं। ऐसे दलितों को राजनीति में प्रोत्साहन दिया जाएगा जिनका दलित मुक्ति ही जीवन लक्ष्य हो।(9)

दलित पैंथर आन्दोलन ने दलितों में ऐसी इच्छा शक्ति का निर्माण किया कि अम्बेडकरवाद फिर से दलित सम्प्रदाय में एक ठोस विश्वास के साथ विकसित हुआ। इस आदोलन ने एक प्रकार से दलितों के मन में रूढ़िवाद का खात्मा कर दिया था। लेकिन यह उपलब्धि ऐसे ही हाथ नहीं लगी थी इसके लिए इस आदोलन के नेताओं को समाज के सम्पन्न उच्च जातिय वर्ग से दुश्मनी भी मोल लेनी पड़ी। परन्तु इस आंदोलन को सुदृढता से चलाने के लिए नेताओं को आपसी भाईचारे से भी मुंह मोडना पड़ा। परन्तु ऐसा नहीं था कि पैंथरों के जितने भी गुट बने वे अप्रभावशाली थे बल्कि इन गुटों के बनने का फायदा यह हुआ कि यह आदोलन पहले महाराष्ट्र के कोने-कौने फूटा तथा फिर पूरे राष्ट्र के कौने-कौने संचालित हुआ। इस आदोलन ने अपनी उपलब्धियों से भेदभाव युक्त समाज का स्वरूप बदलने में भरसक कोशिश की।(10)

दलित पैंथर आदोलन ने सीमाओं में रहने के बावजूद भी हजारों अनुसूचित जाति के लोगों को आत्मविश्वास एवं साहस प्रदान किया। इसलिए ऐसे आंदोलन की जरूरत थी जो अस्पृश्यता की समस्या को हल कर सके। दलित पैथरों ने इसके लिए काफी अच्छे प्रयास किये जो पहले कभी नहीं हुए थे। पैंथरों ने इस रहस्य का खुलासा किया कि अछूत निष्क्रिय तथा चुप रहने वाले नहीं हैं। उन्होंने अपनी कार्यवाहियों द्वारा दलितों को यह महसूस कराया कि लोकतंत्र के लोगों को अधिकार लड़कर लेने होंगे। पैंथर ही पहले आदोलनकारी थे जिन्होंने अन्याय, क्रूरता, शोषण तथा असमान जाति व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठायी। उन्होंने वे प्रश्न तथा मुद्दे उठाए जो स्वतंत्रता के बाद भी हल नहीं हुए थे। इस आंदोलन ने लोगों का ध्यान अत्याचार असमानता की ओर खींचा तथा लोगों में जागरूकता पैदा की इसलिए जब दलित पैंथर आंदोलन उभरा। उसमें दलित युवकों का ज्यादा समावेश हुआ।

पैंथरों ने काफी हद तक नीति निर्णायकों को दलितों की समस्याओं से अवगत कराया तथा इन समस्याओं के निदान के लिए उपयुक्त संस्थागत स्रोतों पर जोर दिया। इन्होंने डॉ अम्बेडकर की विचारधारा को आगे बढ़ाने की पहल की। उन्होंने अपने आपको हरिजन और अस्पृश्य के बजाय दलित कहलवाना ज्यादा उचित समझा। उन्होंने युवा पीढ़ी की सोच को समझा और उनको मुकाबले की व्यूह रचना एवं लड़ाकू अवस्था निर्मित करने की शिक्षा दी। आंदोलन में जान डालने के लिए एक प्रकार का प्रेरक साहित्य लिखा गया। दलित पैंथरों की

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

सभी उपलब्धियां साहित्यिक जोशीली कविताओं की ही देन थी। दलित लेखकों ने समकालीन मराठी साहित्य को झूठा पाया क्योंकि वह दलितों की सामाजिक स्थिति की वास्तविकता को नहीं दर्शाता था। वे दरअसल ऐसा साहित्य चाहते थे जो मानवता के उत्पीड़न को दर्शाये। उन्होंने अस्पृश्यता तथा दलितों के जीवन की भयंकर कठिनाइयों के बारे में समकालीन लेखों में अपना असंतोष प्रकट करना शुरू कर दिया एवं दलित समुदायों पर बढ़ता अत्याचार तथा बिगड़ती स्थिति के बारे में कुछ करने की ठान ली। परिणामस्वरूय दलित साहित्य पद दलितों के उत्पीड़न तथा उनके समग्र बदलाव की मांग को दर्शाने लगा। इस प्रकार दलित कविताओं, कहानियों तथा आत्मकथाओं ने अत्याचार के विरोध में दलितों में क्रांतिकारी धारणा विकसित की थी जिसका श्रेय मुख्यत दलित पैंथरों को जाता है।

सन्दर्भ

1. चंचरीक कन्हैयालाल, आधुनिक भारत का दलित आन्दोलन, नई दिल्ली. पृ० 329 330
2. कुमार अजय, दलित पैंथर आन्दोलन, दिल्ली, पृ० 56-57
3. वहीं, पृ० 57
4. वही पृ० 58
5. चचरीक कन्हैयालाल, पूर्वोक्त, पृ० 332
6. गौतम एस०एस०, भारतीय दलित आंदोलन और सामाजिक एवं सास्कृतिक परिवर्तन, दिल्ली, पृ० 15
7. तेलतुमडे आनंद, उत्तर अम्बेडकर दलित आंदोलन दशा और दिशा, दिल्ली, पृ० 16-17
8. चंचरीक कन्हैयालाल, पूर्वोक्त, पृ० 332
9. कुमार अजय, पूर्वोक्त, पृ० 85-66
10. वही पृ० 113